मोहन राकेश

जन्म	:	8 जनवरी 1925 ।
निधन	:	3 दिसंबर 1972 ।
जन्म-स्थान	:	जंडीवाली गली, अमृतसर, पंजाब ।
बचपन का नाम	:	मदन मोहन गुगलानी ।
माता-पिता	:	बच्चन कौर एवं करमचंद गुगलानी (पेशे से वकील, साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़ाव) ।
शिक्षा	:	एम० ए० (संस्कृत) लाहौर । ओरिएंटल कॉलेज, जालंधर से एम० ए० (हिंदी) ।
वृत्ति	:	दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन । 'सारिका' के कार्यालय में नौकरी । 1947 के आस-पास एलफिंस्टन कॉलेज, मुंबई में हिंदी के अतिरिक्त भाषा प्राध्यापक । कुछ समय तक डी० ए० वी० कॉलेज, जालंधर में प्रवक्ता । 1960 में दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक । 1962 में 'सारिका' के संपादक । अंत में मृत्युपर्यंत स्वतंत्र लेखन ।
कृतियाँ	:	इंसान के खंडहर (1950), नए बादल (1957), जानवर और जानवर (1958), एक और जिंदगी (1961), फौलाद का आकाश (1972), वारिस (1972) – सभी कहानी संग्रह । अँधेरे बंद कमरे (1961), न आनेवाला कल (1970), अंतराल (1972) – सभी उपन्यास । आषाढ़ का एक दिन (1958), लहरों के राजहंस (1963), आधे अधूरे (1969) – सभी नाटक । पैर तले की जमीन, अंडे के छिलके और अन्य एकांकी (1973) – सभी एकांकी । आखिरी चट्टान तक (यात्रा वृत्तांत) । परिवेश, रंगमंच और शब्द, कुछ और अस्वीकार, नई निगाहों के सवाल, बकलम खुद (लेख-निबंध) । मृच्छकटिकम्, अभिज्ञानशाकुंतलम्, एक औरत का चेहरा (अनुवाद) । समय सारथी (जीवनी संकलन) । मोहन राकेश की डायरी (निधनोपरांत प्रकाशित) ।
शोध कार्य	:	'नाटक में सही शब्द की खोज' विषय पर नेहरू फेलोशिप के अंतर्गत कार्य पूरा नहीं कर पाए ।

मोहन राकेश 'नई कहानी' आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षर थे । वे बीसवीं शती के उत्तरवर्ती युग के प्रमुख कथाकार एवं नाटककार थे । कथा साहित्य के अंतर्गत उन्होंने कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं । नाटक के क्षेत्र में तो वे जयशंकर प्रसाद के बाद की सबसे बड़ी प्रतिभा माने जाते हैं । आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच की युगांतरकारी प्रतिभा के रूप में वे अखिल भारतीय ख्याति अर्जित कर चुके हैं । हिंदी का आधुनिक रंगमंच उन्हें अपना प्रमुख प्रेरणा पुरुष मानता है । वे रंगकर्मी, अभिनेता या रंगनिर्देशक नहीं थे, महज नाटककार थे; किंतु उनके नाटकों की परिकल्पना इतनी ठोस, जटिल और आधुनिक रंग संकल्पना को सर्जनात्मक रूप से उत्तेजित करनेवाली थी कि आधुनिक रंगमंच का हिंदी में जो नवीन संघटन-संयोजन हुआ उस पर मोहन राकेश की निर्णायक छाप पड़ी । इतना ही नहीं, हिंदी में उनके समकालीनों में अनेक लोगों ने आधुनिक विषयवस्तु, कथ्य और रंग-ढंग के जो नाटक लिखे उनके पीछे इस क्षेत्र में अपने कार्यों से मोहन राकेश द्वारा लाई गई हलचल की प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रेरणा है ।

नाटक मुख्यत: मंच पर दृश्याभिनय के लिए ही लिखा जाना चाहिए और उसका प्रभाव केवल लिखे हुए शब्दों पर नहीं बल्कि अभिनेताओं के व्यक्तित्व, स्वर और अभिनय कुशलता पर, रंगमंच की सजावट और प्रकाश पर तथा अभिनेता एवं दर्शक के साक्षात्कार से उत्पन्न होनेवाले विशेष वातावरण पर निर्भर होना चाहिए । नाटक का लिखित रूप बहुत महत्त्वपूर्ण है, किंतु दृश्याभिनय का संपूर्ण प्रभाव देनेवाले अनेक उपकरणों में से वह केवल एक उपकरण है । इन सचाइयों को मोहन राकेश ने अपने दृष्टिपथ और चिंताकेंद्र में रखा और नए ढंग के नाटकों की रचना की । वे अपने असामयिक निधन के समय तक नाटक और रंगमंच की संश्लिष्ट भूमि से जुड़ी समस्याओं को लेकर शोधरत थे ।

उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध में पश्चिमी देशों में आधुनिक नाटकों का जन्म और विकास हुआ । तब से लेकर अब तक यूरोप और अमेरिका में नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में विपुल प्रयोग हुए । इससे नाटक और मंच दोनों ही क्षेत्रों में युगांतरकारी परिवर्तनों के अनेक चरण घटित हुए । मोहन राकेश इस विश्वपरंपरा को अपने ढंग से आत्मसात करते हुए आगे बढ़े । उनके नाट्यलेखों में मंचसज्जा या दृश्यबंध, वेशभूषा, रूपसज्जा, रंग-संगीत और प्रकाश–इन सबकी चेतना बराबर रहती आई है । उन्होंने हिंदी नाटक को अँधेरे बंद कमरों से बाहर निकालकर युगों के रोमानी ऐंद्रजालिक सम्मोहन से उबारा तथा एक नए दौर के साथ उसे जोड़कर दिखाया ।

यहाँ प्रस्तुत एकांकी उनकी पुस्तक 'अंडे के छिलके तथा अन्य एकांकी' से ली गई है । एकांकी, जैसा नाम से ही स्पष्ट है, एक अंक की बहुत छोटी रचना है और उसकी तुलना प्राय: कहानी से की जाती रही है । मोहन राकेश की इस मार्मिक रचना में निम्न मध्यवर्ग की एक ऐसी माँ-बेटी की कथावस्तु प्रस्तुत है जिनके घर का इकलौता लड़का सिपाही के रूप में द्वितीय विश्वयुद्ध के मोर्चे पर बर्मा में लड़ने गया है । वह अपनी माँ का इकलौता बेटा और विवाह के लिए तैयार अपनी बहन का इकलौता भाई है । उसी पर घर की पूरी आशा टिकी हुई है । वह लड़ाई के मोर्चे से कमाकर लौटे तो बहन के हाथ पीले हो सकें । माँ एक देहाती भोली स्त्री है, वह यह भी नहीं जानती कि बर्मा उसके गाँव से कितनी दूर है और लड़ाई कैसी और किनसे किसलिए हो रही है । उसका अंजाम ऐसा भी हो सकता है कि सबकुछ खत्म हो जाए–ऐसा वह सोच भी नहीं सकती । माँ और छाया की तरह उससे लगी बेटी के भीतर की वह आशा जो बेटे से जुड़ी हुई है अनेक रूप-रंग ग्रहण करती है । उसकी संपूर्ण नाटकीयता और रंग संभावनाओं का लेखक ने सधे हाथों ऐसा उद्घाटन किया है कि रचना के अंत में एक अपार विषाद मन पर स्थाई प्रभाव छोड़ जाता है ।

◆ ◆ ◆

"तू हवा और पानी का साथी है, उनके साथ मिलकर उनकी तरह ही जी–जीवन में ख्याति या प्राप्ति तेरी उपलब्धि नहीं है । तेरी उपलब्धि तेरी खोज है । खोज और जी ।"

–मोहन राकेश

सिपांही की माँ

पात्र

बिशनी	1 लड़की
मुन्नी	2 लड़की
कुंती	मानक
दीनू	सिपाही

देहात के घर का आँगन, अँधेरा और सीलदार । आँगन के बीचोबीच एक खस्ताहाल चारपाई पड़ी है। एक और वैसी ही चारपाई दीवार के साथ रखी है । दाएँ कोने में दो-तीन मिट्टी की हंडियाँ पड़ी हैं । सामने एक लकड़ी का टूटा हुआ दरवाज़ा है, जो घर के अंदर खुलता है । दरवाजे पर एक अंगोछा और चारपाई पर एक फटी हुई धोती सूख रही है । बाईं ओर बाहर जाने का रास्ता है, जिसमें किवाड़ नहीं है ।

परदा उठने पर बिशनी चारपाई के पास मोढ़े पर बैठी चरखे पर सूत कातती दिखाई देती है । उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हैं और बाल सब सफेद हो चुके हैं । मुन्नी, उसकी चौदह बरस की लड़की, बाहर की चौखट से सटकर खड़ी है । उसकी हरे रंग की सलवार-कमीज बहुत मैली हो रही है । कुछ क्षण चरखे की आवाज और कबूतरों की गुटर-गूँ सुनाई देती है । बीच-बीच में बिशनी थोड़ा खाँस लेती है । फिर घोड़ागाड़ी के दूर से आने और रुकने का शब्द सुनाई देता है ।

मुन्नी : **(पीछे की ओर मुड़कर उत्तेजित स्वर से)** डाक वाली गाड़ी आ गई, माँ ! मैं अभी चिट्ठी पूछ कर आती हूँ ।

मुन्नी बाहर चली जाती है । बिशनी आँखें मूँदकर हाथ जोड़ लेती है । कबूतरों की गुटर-गूँ का स्वर पहले तेज होकर फिर मंद हो जाता है । बिशनी आँखें खोलकर दरवाजे की ओर देखती है । मुन्नी निराश और थकी सी लौटकर आती है ।

बिशनी : क्यों री, डाक वाली गाड़ी ही थी ?

मुन्नी : हाँ, डाक वाली गाड़ी ही थी !

घोड़ागाड़ी के चलने और क्रमशः दूर होने का शब्द सुनाई देता है । मुन्नी बिशनी के मोढ़े के पास फर्श पर बैठ जाती है । बिशनी के चेहरे की रेखाएँ गाढ़ी हो जाती हैं ।

बिशनी : (ठंढी साँस लेकर) आज भी चिट्ठी नहीं आई ! जाने भाग में क्या लिखा है ?

मुन्नी : आज सिरफ चौधरी का पिलसन का मनीआर्डर आया है । और कोई चिट्ठी नहीं आई ।

बिशनी : ये मुए जाने चिट्ठी रास्ते में रख लेते हैं कि क्या करते हैं ? मेरा मानक तो ऐसा नहीं कि दो-दो महीने चिट्ठी ही न लिखे । पहले हर पंद्रहवें रोज चिट्ठी आ जाती थी । अबकी न जाने कौन पहाड़ रास्ते में खड़ा हो गया है ? कम से कम अपनी राजी-खुशी तो लिख देता ।

मुन्नी : माँ, मेरा दिल कहता है कि अगले मंगल को भैया की चिट्ठी जरूर आएगी ।

बिशनी : तेरा दिल तो हर मंगल को कहता है, पर चिट्ठी आने का नाम नहीं लेती । जाने भाग में क्या खोट है जो चिट्ठी के लिए इतना तरसना पड़ता है । इस बार यह घर आ ले, फिर मैं इससे पूछूँगी...।

मुन्नी : पिछली चिट्ठी में भैया ने लिखा था कि वे ब्रम्मा की लड़ाई पर जा रहे हैं । माँ, शायत उन्हें लड़ाई में चिट्ठी लिखने की फुर्सत ही न मिलती हो ।

बिशनी : इतनी भी फुर्सत नहीं मिलती कि माँ को चार हरफ लिख कर डाल दे ? उसे यह नहीं पता कि मेरी चिट्ठी जाती है तो माँ के कलेजे में जान पड़ती है ? माँ के कौन दो-चार हैं जिनके सहारे वह परान लेकर बैठी रहेगी ? नदीदे को यह बात तो सोचनी चाहिए ।

मुन्नी बिशनी के घुटने पर बाँहे फैलाकर उन पर सिर रख देती है ।

मुन्नी : तुम फिकर क्यों करती हो, माँ ? देख लेना, अगले मंगल को चिट्ठी जरूर आएगी ।

कुछ क्षण निःस्तब्धता । बिशनी मुन्नी को घुटने से हटा कर फिर चरखा चलाने लगती है । मुन्नी उठकर सूखी हुई धोती को चारपाई से समेटने लगती है ।

मुन्नी : (धोती तह करते हुए बीच में रुककर) ब्रम्मा यहाँ से कितनी दूर होगा, माँ ?

बिशनी : चौधरी कहता था कई सौ कोस दूर है । जाने चौधरी को भी पता है या नहीं ? जब जो उसके मुँह में आता है कह देता है ।

मुन्नी : चौधरी यह भी कहता है कि वहाँ गाड़ी-मोटर नहीं जाती । पानी वाले जहाज में बैठकर वहाँ जाते हैं ।

बिशनी : यह तो मानक भी कहता था कि कलकत्ते से ब्रम्मा पानी वाले जहाज में बैठकर जाते हैं । मानक कलकत्ते के समुंदर में पानी वाले जहाज देख कर आया था ।

मुन्नी : ब्रम्मा से चिट्ठी भी तो फिर, माँ, जहाज में ही आती होगी । अगर हमारी चिट्ठी वाला जहाज डूब गया हो तो....... ?

बिशनी : ऐसी काली जबान न बोल । मुँह अच्छा न हो तो बात तो आदमी अच्छी करे । मानक कहता था कि जहाज इत्ता बड़ा होता है कि हमारे जैसे चार गाँव एक जहाज में आ जाएँ । ......इत्ता बड़ा जहाज कैसे डूब सकता है ?

मुन्नी : (संकोच के साथ) माँ, पता नहीं सच है या झूठ, पर चौधरी कहता था कि हर रोज कोई न

कोई जहाज डूब जाता है ।

बिशनी : चौधरी एक लड़ाई में क्या हो आया है, दुनिया भर की सारी अकल उसके पेट में आ गई है । वह यहाँ बैठा ही सब कुछ जानता है । अपनी तिरिया के चरित्तर का पता नहीं, जहाज डूबने का पता है ।

मुन्नी धोती तह करके अंदर ले जाती है । बाहर से पड़ोसिन कुंती आँगन में आती है । अधेड़ होने पर भी उसके चेहरे पर स्वास्थ्य की लाली झलकती है ।

कुंती : बिशनदेई, आज भी कोई चिट्ठी नहीं आई ?

बिशनी : आ कुंती !

चरखा-पूनी अलग हटा देती है । कुंती उसके नजदीक चारपाई पर आ बैठती है ।

कुंती : कहते हैं, आज कल ब्रम्मा में बड़े जोर की लड़ाई हो रही है ।

बिशनी : यहाँ से कौन ब्रम्मा होकर आया है ? लड़ाई का हाल वहाँ वालों को पता है कि यहाँ वालों को पता है ? चौधरी रोज घर बैठा खबरें गढ़ता रहता है, मानक आएगा तो पता चलेगा कि यह कितना बिदवान है । आज यह जो जी में आए कह ले, सब सच है ।

कुंती : बेचारा जल्दी घर वापस आ जाए और आकर बहन के हाथ पीले करे । सब सहेलियाँ तो एक-एक करके चली गईं । धन्नो भी बैसाख में चली जाएगी । बस दो महीने में ही सब कुछ करना-धरना है । ये सारा शहर ढूँढ़ आए हैं, कहीं दस गज मलमल नहीं मिली । सब चीजें जैसे विलायत चली गई हैं । ....तूने अभी इसके लिए कोई वर-घर नहीं देखा ?

बिशनी : वर-घर देखकर ही क्या करना है, कुंती ? मानक आए तो कुछ हो भी । तुझे पता ही है, आजकल लोगों के हाथ कितने बढ़े हुए हैं ।

कुंती : पर तू देख, चौदह की तो हो गई है, अब घर में रखकर और कितनी बड़ी करेगी ? मेरी धन्नो का अभी तेरहवाँ चल रहा है पर लोगों ने जान खा ली थी कि लड़की मुटियार हो गई है, अब जल्दी से इसे कहीं विदा करो । ....तू मानक के आने तक देखभाल तो कर । और जाने मानक को आने में अभी कितने दिन लगते हैं ? लड़ाई का कुछ पता है ?

बिशनी : नहीं, वह चार-छह महीने में जरूर आ जाएगा । वह कह गया था कि जल्दी से जल्दी छुट्टी लेकर मिलने के लिए आएगा । उसे गए भी सात महीने हो गए हैं ।

कुंती : हाँ, शायद चार-छह महीने में आ जाए । बिशनदेई, लड़ाई का मुँह शेर का मुँह है । शेर का मुँह किसने सूँघकर देखा है ? लड़की तो देखते-देखते तार हुई जा रही है । तू कहे तो मैं कहीं खोज-खबर करती हूँ । मानक जाने साल में आता है कि छह महीने में आता है कि....

दीनू कुम्हार, हड्डियों का चलता-फिरता ढाँचा सा, बाहर से हाँफता हुआ आता है । उसके सिर के और दाढ़ी के बाल आधे पक चुके हैं । हाथ मिट्टी में सने हैं ।

दीनू : मुन्नी की माँ, आज तो हद हो गई !

बिशनी : किस बात की हद हो गई ? इतना हाँफ क्यों रहा है ?

दीनू : बताने की बात नहीं, तू बाहर निकल कर अपनी आँखों से देख.....।

बिशनी : कुछ बताएगा भी, बात क्या है ?

दीनू : बात क्या है, तमाशा है । सच कहता हूँ मुन्नी की माँ, बेशरमी की हद हो गई ।

बिशनी : क्या फिर वह चौधरी की बेवा.....?

दीनू : नहीं, उसकी बात नहीं है । दो जवान छोकरियाँ आज कहीं से आई हैं । उनका ऐसा पहिरावा है कि तुमसे क्या कहूँ ? रंग काला है पर बिलकुल मेमों की तरह टिट-फिट चलती है । और घर-घर जाकर आटा-दाल माँग रही हैं । इतनी जिंदगी चली गई, पर ऐसी बेशरमी कभी नहीं देखी ।

दीनू बाहर की ओर झाँक कर देखता है । मुन्नी अंदर आ जाती है ।

दीनू : **(मुड़कर)** वे तेरे घर की तरफ ही आ रही हैं ।.....मुन्नी को अंदर भेज दे । मैं जाकर चौधरी को खबर सुना दूँ ।

दीनू बाहर चला जाता है । बिशनी, कुंती और मुन्नी उत्सुक आँखों से बाहर की ओर देखती हैं । दो बर्मी लड़कियाँ बाहर से आती हैं । वे जाँघों तक लंबे मैले फ्रॉक पहने हैं । दोनों के हाथों में एक-एक थैला है ।

कुंती : **(बिशनी के कान में फुसफुसाकर)** ये लड़कियाँ क्रिस्टान हैं ।

बिशनी उसका मतलब न समझकर प्रश्न भरी नजरों से उसकी ओर देखती है ।

कुंती : **(उसी स्वर में)** क्रिस्टान होती है जो मरदों को घरों में रखती हैं और आप बाहर घूमती हैं ।

1लड़की : थोड़ा दाल-चावल दे दीजिए माँजी, परमात्मा आपका भला करेगा ।

2लड़की : हम रिफ्यूजी हैं माँजी, बहुत दूर से भूखे-प्यासे आ रहे हैं ।

1लड़की : हम लोग रंगून से आ रहे हैं । हजारों लोग वहाँ से घर-बार छोड़कर चले आए हैं । हम एक घर की दस औरतें यहाँ से तीन मील दूर एक पुरानी धरमशाला में पड़ी हैं । हमारे दो भाई रास्ते में मारे गए हैं । थोड़ा दाल-चावल दे दीजिए माँजी, आपकी जान की दुआ.....

कुंती : **(बिशनी के कान के पास)** यह लड़कियाँ क्रिस्टान नहीं हैं । इनके लच्छन अच्छे नजर नहीं आते ।

बिशनी : **(लड़कियों के चेहरे पर दृष्टि जमाए हुए)** हाय री, तुम इस तरह भीख क्यों माँग रही हो ? देखने में तो तुम अच्छे घर की नजर आती हो......?

1लड़की : पहले जब घर-बार था तब और बात थी, माँजी ! अब घर-बार उजड़ गया है तो भीख का ही आसरा है । जापानी जहाजों ने बम मार-मार कर सारा शहर उजाड़ दिया है । रोज वहाँ गोलीबारी होती है । यहाँ तो आप लोग स्वर्ग में रहती हैं, माँजी ! लड़ाई की वजह से हमारा मुल्क तो बिलकुल तबाह हो गया है ! फौज को छोड़कर और कोई वहाँ नहीं रहा... ।

मुन्नी : **(जरा आगे आकर)** माँ, यह कहती है इनके मुल्क में बहुत लड़ाई होती है । इससे पूछो ब्रम्मा इनके मुलक से कितनी दूर है ?

2लड़की : हमारे मुल्क का नाम ही बर्मा है, बहनजी ! हमारा शहर रंगून बर्मा में ही है ।

बिशनी और मुन्नी : **(एक साथ)** तुम लोग ब्रम्मा से आई हो ?

1लड़की : हाँ, माँजी, हम बर्मा से ही आई हैं । वहाँ रहने वाले हजारों-लाखों लोगों की जानें चली गई हैं । जिनको जिधर रास्ता मिलता है वह उधर भागकर जान बचाने की कोशिश करता है । बहुत लोग भरे हुए घर छोड़कर चले आए हैं । माँजी, आज हम लोग आप लोगों के ही आसरे हैं । जो कुछ थोड़ा-बहुत आप लोगों के घरों से मिल जाता है उसी से.......।

बिशनी : **(बात काटकर)** क्यों री, बर्मा में बहुत लड़ाई हो रही है ?

1लड़की : वहाँ दिन-रात आग बरसती है, माँजी ! हम लोग फिर भी खुशकिस्मत हैं जो जान लेकर निकल आए हैं । तेरह दिन तक हम लोग भूखे-प्यासे जंगली रास्ते में चलते रहे हैं ।

मुन्नी : तुम लोग ब्रम्मा से पैदल चलकर आई हो ?

1लड़की : जी हाँ, जान बचाने का यही रास्ता था ! रास्ते में जंगल में बड़ी-बड़ी दलदलें पड़ती हैं । हममें से एक औरत एक दलदल में फँसकर वहीं रह गई.....

मुन्नी : माँ, ये कहती हैं कि वहाँ से पैदल आई हैं और चौधरी कहता था कि वहाँ पानी वाले जहाज से जाते हैं ?

1लड़की : जी, असली रास्ता जहाज का ही है । मगर उस रास्ते में बहुत खतरा है । जापानी लोग जहाजों को रास्ते में ही डुबो देते हैं । और हम लोगों को जहाज मिलते भी नहीं । जहाजों पर सिर्फ फौजी लोग आते-जाते हैं ।

बिशनी : **(सिहर कर)** जब जहाज डूब जाते हैं तो फौजी लोग क्यों जहाजों पर आते-जाते हैं ? सरकार इतनी मूरख है कि फौजियों को डूबने के लिए भेज देती है ?

1लड़की : फौजी लोग समुंदर में जाकर लड़ते हैं, माँजी ! जहाजों-जहाजों में लड़ाइयाँ होती हैं । उधर से जापानी जहाज गोले चलाते हैं और उधर से अंग्रेजों के जहाज । ऊपर से हवाई जहाज मार करते हैं । बड़ी भयानक लड़ाई होती है !

बिशनी के चेहरे की रेखाएँ गाढ़ी हो जाती हैं । वह चर्खे को अपनी ओर खींचने का प्रयत्न करती है, पर उसके हाथ जैसे निःशक्त हो रहे हैं ।

मुन्नी : तुम जिस रास्ते से आई हो, उस रास्ते से फौजी नहीं भागकर आ सकते ?

1लड़की : नहीं, फौजी वहाँ लड़ने के लिए हैं, वे नहीं भाग सकते । जो फौज छोड़कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है.......।

बिशनी : **(सिहर कर)** हाय, नहीं ।..... फौजियों को भागने की क्या जरूरत है ? उन्हें अपनी मियाद पर छुट्टी मिल जाती है ।.....जिसे आना होगा वह छुट्टी लेकर आएगा, भागकर क्यों आएगा ? ......वे इतने अनजान थोड़े ही हैं ?

2लड़की : आपके बच्चों की बड़ी उमर होगी, माँजी ! हमें दो मुट्ठी चावल दे दीजिए ।

कुंती : यहाँ हमारे खाने को चावल नहीं है और इन लोगों को चावल चाहिए.......।

बिशनी : मुन्नी !

मुन्नी सामने आ जाती है ।

बिशनी : जा, अंदर से हँडिया से कटोरी भरकर चावल ले आ ।

मुन्नी अंदर चली जाती है । कुंती असंतोषपूर्ण दृष्टि से लड़कियों को देखती रहती है । कुछ क्षण खामोशी रहती है । बिशनी सिर झुकाए कुछ सोचती रहती है ।

बिशनी : **(सिर उठाकर)** क्यों री, ब्रम्मा से यहाँ तक कितने दिन का पैदल रास्ता है ?

1लड़की : दिनों का कोई हिसाब नहीं है, माँजी ! पहुँच जाएँ तो महीना-बीस दिन में पहुँच जाएँ और न पहुँच पाएँ तो कभी न पहुँच पाएँ । एक तो रास्ते में इतने घने जंगल हैं, फिर जंगली जानवर हैं और फिर पता नहीं कहाँ दुश्मन की फौज का मोर्चा हो । जंगल के चप्पे-चप्पे में लड़ाई चलती है, माँजी ! हमने रास्ते में सैकड़ों सिपाहियों की गली-सड़ी लाशें देखी थीं । यहाँ हिंदुस्तानी सिपाहियों की लाशें पड़ी मिलतीं तो वहाँ जापानी सिपाहियों की । **(सिहर कर)** उनकी हालत देखकर दिल दहल जाता था.....।

बिशनी : **(विह्वल स्वर में)** हाय, बस करो.......!

अपने पल्ले में आँखें छिपा लेती है । मुन्नी अंदर से चावल लेकर आती है और एक लड़की उन्हें अपने झोले में डलवा लेती है ।

1लड़की : अच्छा माँजी, परमात्मा आपको सुखी रखे !

दोनों लड़कियाँ बाहर चली जाती हैं । कुंती चारपाई सरकाकर बिशनी के मोढ़े के बहुत पास आ जाती है ।

कुंती : **(बिशनी के कंधे पर हाथ रखकर)** बिशनदेई !

बिशनी पल्ले से आँखें पोंछकर सिर ऊपर उठाती है ।

कुंती : तू इस तरह दिल क्यों हल्का कर रही है ? क्या पता है ये ब्रम्मा से आई हैं या कहाँ से आई हैं ? मुझे तो इनका चरित्तर ऐसा-वैसा ही लगता है । हाय रे राम ! लड़कियाँ हैं कि......!

मुन्नी बिशनी के पास फर्श पर बैठ जाती है ।

मुन्नी : **(बिशनी के घुटने को सहलाते हुए)** माँ, मैं जो तुमसे कहती हूँ कि अगले मंगल को भैया की चिट्ठी जरूर आएगी । जितनी हमें फिकर है, भैया को भी तो वहाँ उतनी ही फिकर होगी ।

बिशनी : **(आँखें पोछती हुई)** मैं कब कहती हूँ कि उसे फिकर नहीं । पर इतना तो लिख दे कि माँ मैं यहाँ हूँ, अच्छी तरह से हूँ.......।

मुन्नी : और क्या पता माँ, कि भैया आप छुट्टी लेकर आ रहे हों और इसलिए उन्होंने चिट्ठी न लिखी हो......?

बिशनी : **(ठंडी साँस लेकर)** क्या पता ?

मुन्नी : मेरा दिल कहता है कि भैया आप ही आएँगे ।

बिशनी कुछ न कह कर उसके सिर पर हाथ फेरने लगती है ।

कुंती : **(अपनी ही सोच से जागकर)** ये लड़कियाँ इतनी बड़ी हो जाती हैं, फिर भी इनके घरवाले इनका ब्याह नहीं करते ?

बिशनी : क्या मालूम ?

मुन्नी की ठुड्डी उठाकर उसका चेहरा देखती रहती है । फिर उसका माथा चूमकर उसे साथ सटा लेती है ।

बिशनी : तेरा दिल ठीक कहता है, बेटी ! चिट्ठी न आई तो वह आप ही आएगा !

मुन्नी लाड़ से माँ के गले में बाँहें डाल देती है । बिशनी उसे चूमकर और साथ सटा लेती है ।

पर्दा गिरता है ।

दूसरा दृश्य

वही आँगन । समय रात । दोनों चारपाइयाँ आँगन में बिछी हैं । दाईं ओर की चारपाई पर मुन्नी हथेलियों पर चेहरा टिकाए बैठी है । उस चारपाई पर ओढ़ने के लिए एक फटी हुई लोई रखी है । दूसरी चारपाई पर घिसी हुई दरी बिछी है और ऊपर दोहरा सूती खेस पड़ा है । बिशनी जलती हुई ढिबरी लिए अंदर से आँगन में आती है ।

बिशनी : **(पास आकर)** तू अभी सोई नहीं ?

मुन्नी : **(चौंककर)** मुझे नींद नहीं आई ।.....अभी सो जाती हूँ ।

लोई खींचकर अपनी टाँगों पर कर लेती है ।

बिशनी : इतनी रात चली गई और तुझे अभी नींद नहीं आई !

मुन्नी : तुम भी तो अभी तक जाग रही हो ।

बिशनी : मेरी उमर में तो वैसे ही नींद नहीं आती ।......अब सो जा, सवेरे उठ कर गोबर लाना है ।

बिशनी अपनी चारपाई पर आ बैठती है । मुन्नी लेट जाती है । कुछ क्षण निःस्तब्धता रहती है ।

मुन्नी : **(करवट बदलकर)** माँ, आज तारो ससुराल से वापस आ गई है ।

बिशनी : **(अन्यमनस्क भाव से)** अच्छा !

मुन्नी : उसके घर वाले ने इस बार उसे सुच्चे मोतियों के कड़े बनवा दिए हैं । वह आज गाँव में सबको दिखाती फिर रही थी । उसके कड़ों के मोती तारों की तरह चमकते हैं । बंतो के कड़े भी उसके सामने कुछ नहीं हैं ।

बिशनी : अच्छा, अच्छा ! तेरा भैया आएगा तो तेरे लिए उससे भी अच्छे कड़े और चूड़ियाँ लाएगा । अब सो जा नहीं तो सवेरे तेरी नींद नहीं खुलेगी ।

मुन्नी अच्छी तरह लोई ओढ़ कर करवट बदल लेती है । बिशनी ढिबरी बुझा कर कोने में रख देती है और आप भी खेस ओढ़ कर लेट जाती है । उसके ढिबरी बुझाते ही प्रकाश का रंग पीले से हल्का

नीला हो जाता है । साथ टिड्डियों की चिक-चिक का शब्द सुनाई देने लगता है जो क्रमशः काफी तेज हो जाता है । बिशनी करवट बदलती है । प्रकाश हल्के से गहरा नीला हो जाता है और दूर एक कुत्ते के रोने की आवाज सुनाई देती है । फिर दूर गोली चलने का शब्द सुनाई देता है और कई व्यक्तियों के कराहने की आवाजें आती हैं । बिशनी चौंककर उठ बैठती है । उसके उठने के साथ ही प्रकाश का रंग फिर हल्का नीला हो जाता है ।

बिशनी : मानक ! (इधर-उधर देखकर) मानक !

कुछ ऐसा शब्द सुनाई देता है जैसे दूर आँधी चल रही हो ।

: **(घबराए हुए स्वर में)** मानक !

बाहर से एक आहत व्यक्ति की आवाज सुनाई देती है– 'माँ !' बिशनी चारपाई से उठ पड़ती है ।

: **(अस्तव्यस्त भाव से)** तो सचमुच तू ही है मानक ?.....कहाँ है बेटे ?

सुनसान में झिल्लियों के बोलने का-सा शब्द सुनाई देता है और फिर जैसे कोई भागता हुआ आता है । बिशनी अस्तव्यस्त भाव से चारों ओर देखती रहती है । फौजी लिबास पहने एक घायल युवक डगमगाता सा बाहर से आकर बिशनी के पैरों के पास गिर जाता है । बिशनी तड़पकर उसके पास जमीन पर बैठ जाती है ।

: मानक !

उसका सिर गोदी में लेकर आवेगवश उस पर झुक जाती है । मानक कठिनता से सिर उठाता है ।

मानक : माँ !

बिशनी : **(उसका सिर हाथों में लेकर विह्वल स्वर में)** तू ऐसा क्यों हो रहा है बेटे ?....क्या हुआ है तुझे ?

मानक : मैं घायल हूँ, माँ ! मुझे बहुत गोलियाँ लगी हैं । ......और दुश्मन अब भी मेरे पीछे लगा हुआ है ।

बिशनी : दुश्मन ? कौन दुश्मन तेरे पीछे लगा हुआ है ? तेरा कौन दुश्मन है ?

मानक सीधा होने की चेष्टा करता है पर सफल नहीं हो पाता ।

मानक : वह....वह...उसे.....उसको मैंने कई गोलियाँ मारी थीं । मगर वह मरा नहीं है । वह जिंदा है । .... वह मेरे पीछे लगा हुआ है ।....वह मुझे मारना चाहता है ।....उसने मेरा सारा शरीर जख्मी कर दिया है ।.....मैं दौड़ता हूँ तो वह मेरे पीछे दौड़ता है । मैं रेंगता हूँ तो वह पीछे रेंगता है । वह मुझे नहीं छोड़ेगा । वह बड़ा खतरनाक है....पानी !

बिशनी : तू उठ, चारपाई पर लेट जा । मैं तेरे लिए दूध गरम करती हूँ ।

मानक : दूध नहीं, पानी । और यहीं । वह अभी यहाँ आ जाएगा । जल्दी । उधर देख । अँधेरे में । वह आ तो नहीं रहा ?

बिशनी व्याकुलतापूर्वक बाहर की ओर देखती है ।

बिशनी : नहीं, बेटे ! कोई नहीं है । तू यूँ ही घबरा रहा है । उठ, आराम से चारपाई पर लेट जा...।

मानक : नहीं । .....पानी ।

बिशनी पल भर असमंजस में रहकर उसे छोड़कर उठ खड़ी होती है और अंदर चली जाती है । दो क्षण बाद वह पीतल के गिलास में पानी लिए हुए बाहर आती है । उसके हाथ काँप रहे हैं ।

बिशनी : यह ले बेटे, पानी । आराम से पीना । छोटा-छोटा घूँट करके । निरे हाल पानी पेट में जाकर लगता है । पहले थोड़ा कुछ खा लेता....।

मानक : नहीं । मेरी भूख मर गई है, माँ ! मुझे अब भूख नहीं लगती । पानी....।

बिशनी गिलास लिए हुए उसके पास बैठ जाती है । मानक गिलास उसके हाथ से लेकर गटागट पानी पी जाता है । उसी समय किसी का हास्य स्वर सुनाई देता है । मानक के हाथ से गिलास गिर जाता है । वह बाहर की ओर देखता है । उधर अँधेरे में एक बंदूक का कुंदा चमकता है । मानक सरककर माँ के नजदीक हो जाता है । बिशनी उसे बाँहों में समेट लेती है ।

मानक : यह वही है । वह देख, माँ ! वह आ गया है । वह देख....।

अँधेरे में बंदूक का कुंदा आगे की ओर बढ़ता है । साथ फिर हास्य स्वर सुनाई देता है और फौजी लिबास में एक और आकृति प्रकट होती है । बिशनी मानक को साथ सटा लेती है । आने वाला सिपाही पास आकर हँसता है ।

सिपाही : तू इसे गोद में लिए बैठी है ?....देखती नहीं, यह मुर्दा है ?

बिशनी सिर से पाँव तक सिहर जाती है । मानक उठने के लिए जद्दोजहद करता है ।

मानक : यह झूठ कहता है ! ...मैं मुर्दा नहीं हूँ । मैं हिल-डुल सकता हूँ, बात कर सकता हूँ....मैं मुर्दा नहीं हूँ ।

बिशनी : **(उसे और साथ सटाकर, आश्वस्त स्वर में)** हाँ बेटे ! तेरी जान के साथ तेरी माँ की जान है। मैं जीती हूँ तो तुझे कैसे कुछ हो सकता है ?

सिपाही बंदूक का कुंदा मानक के पास ले आता है ।

सिपाही : इसे कैसे कुछ हो सकता हैं ? मैं अभी इसका शरीर गोलियों से छलनी कर दूँगा । फिर मैं इसकी लाश ले जाकर जंगल में चील और कौओं के आगे डाल दूँगा.....।

हँसता है और बंदूक का कुंदा मानक के बहुत निकट कर देता है । बिशनी कुंदा हाथ से पकड़ लेती है । मानक खड़ा होने की चेष्टा करता है पर लुढ़क कर बिशनी की गोद में गिर जाता है । बिशनी उसे अच्छी तरह छाती से लगा लेती है । सिपाही बंदूक का कुंदा उसके हाथ से छुड़ाकर उसे घूरकर देखता है ।

: तू इसे बचाना क्यों चाहती है ? तू इसकी क्या लगती है ?

बिशनी : मैं इसकी माँ हूँ । मैं तुझे इसे मारने नहीं दूँगी ।

सिपाही : तू इसकी माँ है ? **(उसे भी घूरकर देखकर)** पर तू देखने में तो इस वहशी की माँ नहीं लगती । ....तुझे पता है, यह लड़ाई में वहशियों की तरह गोलियाँ चलाता है ? इसने न जाने कितने सिपाहियों की जान ली है ! ....यह इंसान नहीं, जानवर है। और तू कहती है कि तू इसकी माँ है ।

बिशनी : मैं इसकी माँ हूँ । मेरा बेटा वहशी नहीं है । इसने किसी की जान नहीं ली । यह किसी की जान नहीं ले सकता । यह तो मरता हुआ कबूतर भी आँखों से नहीं देख सकता । मैं इसे लड़ाई पर नहीं जाने दूँगी । यह घर में मेरे पास रहेगा ....।

सिपाही : यह घर में रहेगा ? .....मगर यह तो हजारों का दुश्मन है । हजारों इसके दुश्मन हैं । वे इसको खोज रहे हैं । वे इसकी जान लेना चाहते हैं । **(मानक को पैर से ठोकर मारकर)** अब इसकी जान नहीं बच सकती । मैदान में हजारों सिपाही मर रहे हैं । यह वहाँ जाएगा तो भी मारा जाएगा और यहाँ रहेगा तो भी .....।

फिर मानक को ठोकर मारने लगता है पर बिशनी उसका पाँव पकड़ लेती है ।

बिशनी : नहीं, तू इसे नहीं मार । देख, इसका शरीर कितना घायल है । तू भी तो आदमी है । तेरा भी घर-बार होगा । तेरी भी माँ होगी । तू माँ के दिल को नहीं समझता ? मैं अपने बच्चे को अच्छी तरह से जानती हूँ । यह दिल का बहुत भोला है । इसकी किसी के साथ दुश्मनी नहीं है ।

सिपाही हँसता है ।

सिपाही : इसकी किसी के साथ दुश्मनी नहीं है ? .....यह देख **(बटन खोलकर अपना लहू से तरबतर सीना दिखाता है)** ये सब घाव इसी के किए हुए हैं । मैं इन घावों से कब का मर चुका होता। लेकिन मैं सिर्फ इसे मारने के लिए जिंदा हूँ । इसे मारे बिना मैं नहीं मरूँगा ।

बिशनी : तू बात क्यों नहीं समझता ? मैं इसकी माँ हूँ । मैं इसे अच्छी तरह जानती हूँ । यह किसी दुश्मनी से लड़ाई में नहीं गया । इसे मैंने लड़ाई में भेजा था । ......इसकी बहन अब ब्याहने जोग हो गई है । छह महीने-साल में हमें उसका ब्याह करना है । हमारे घर की हालत बहुत खराब है । अगर लड़की के ब्याह की चिंता न होती तो हम लोग आधा पेट खाकर रह लेते पर मैं कभी इसे लड़ाई पर न भेजती । इस लड़के के सिवा घर में कोई कमानेवाला नहीं है । मैंने सोचा था कि लड़की ब्याही जाएगी तो फिर इसे लड़ाई पर नहीं जाने दूँगी । फिर मैं इसका भी ब्याह कर दूँगी और इसे अपने पास घर में रखूँगी । मुझे क्या पता था कि लड़ाई में जाकर इसकी यह हालत हो जाएगी ? आज यह इस हाल में घर आया है । मैं इसे आज अपने से कैसे अलग कर सकती हूँ ? इसकी जगह तू होता तो तेरी माँ तुझे अपने से अलग होने देती ?

सिपाही : मेरी माँ ...? **(जरा सा हँसकर)** मेरी माँ अब पागल हो गई है । वह रोज मेरी मौत का इंतजार करती है । वह हँसकर कहती है कि थोड़े दिनों में मेरे बेटे की लाश घर आएगी । मेरी बीबी ने अभी से बेवा का स्वांग बना लिया है । उसने मुझे लिखा है कि जिस दिन वह मेरे मरने की खबर सुनेगी उस दिन गले में फाँसी लगाकर मर जाएगी । उसके पेट में छह महीने का बच्चा है । उसके साथ ही वह भी मर जाएगा । **(फिर से सीना खोलकर दिखाता है ।)** और तेरे लड़के ने देख मेरा क्या हाल किया ।....यह अभी भी मेरे खून का प्यासा है । इसकी आँखों को देख । इसकी आँखों में तुझे वहशियाना चमक दिखाई नहीं देती ?

बिशनी : नहीं-नहीं, इसकी आँखें ऐसी नहीं हैं । इस समय इसकी आँखें ऐसी लगती हैं । पर इनका असली रंग ऐसा नहीं है ......।

सिपाही : तू इसकी आँखों का रंग नहीं पहचानती । तू इसकी माँ है, पर तू इस रंग का मतलब नहीं जानती । इसकी आँखों में दुश्मनी है । जब तक मैं सामने हूँ इसकी आँखों का रंग नहीं बदलेगा । देख, यह कैसे आँखों में खून भरकर मुझे देख रहा है ।

मानक सहसा अपने को झटककर उठ खड़ा होता है । वह सिपाही का गला दबाने के लिए उस पर झपटना चाहता है पर सिपाही झट से बंदूक का कुंदा फिर तान देता है । बिशनी जल्दी से बंदूक के कुंदे के आगे आ जाती है ।

बिशनी : नहीं, तू इसे नहीं मारेगा । तूझे तेरी माँ की सौगंध, तू इसे नहीं मारेगा ।

सिपाही : मैं इसे नहीं मारूँगा तो यह मुझे मार देगा । तू यही चाहती है ?

बिशनी : नहीं यह तुझे नहीं मारेगा । मैं इसकी माँ हूँ । मैं इसे जानती हूँ । यह तुझे कभी नहीं मारेगा ।

मानक : **(वीभत्स स्वर में)** मैं इसे नहीं मारूँगा ? **(रौद्र भाव से आगे बढ़ता हुआ)** नहीं ! मैं इसे जरूर मारूँगा, मैं अभी इसके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा ।

आगे बढ़कर सिपाही को धक्का देता है जिससे वह लड़खड़ाकर पीछे गिर जाता है और बंदूक उठा लेता है और उसका कुंदा सिपाही के सीने की ओर तान देता है ।

: मैं वहशी हूँ ! मैं जानवर हूँ ! मै वहशी और जानवर से भी बढ़कर हूँ । इस तरह मेरी तरफ क्यों देख रहा है ? उठ, उठकर मुझे ठोकर लगा....

उसी तरह हँसता है जैसे वह सिपाही हँस रहा था । बिशनी जल्दी से बंदूक के कुंदे के सामने आ जाती है ।

बिशनी : नहीं मानक, तू इसे नहीं मारेगा ! यह भी हमारी तरह गरीब आदमी है । इसकी माँ इसके पीछे रो-रोकर पागल हो गई है । इसके घर में बच्चा होनेवाला है । यह मर गया तो इसकी बीवी फाँसी लगाकर मर जाएगी....।

मानक बिशनी को झटककर बीच में से हटा देता है ।

मानक : मैं इसे नहीं छोड़ूँगा । यह दुश्मन है । मैं इसको अभी मार दूँगा, अभी । यहीं.....।

बिशनी : नहीं मानक, तू इसे नहीं मारेगा.......।

फिर बीच में आने का प्रयत्न करती है पर मानक उसे फिर झटककर हटा देता है । बिशनी चारपाई पर गिरकर हाथों में मुँह छिपा लेती है । सिपाही पार्श्व की ओर हटता है । मानक उसके साथ-साथ आगे बढ़ता है ।

मानक : मैं इसे अभी मार दूँगा । अभी इसकी बोटी-बोटी अलग कर दूँगा....।

सिपाही और मानक की आकृतियाँ धीरे-धीरे पार्श्व में जाकर विलीन हो जाती हैं । बिशनी हाथों में मुँह छिपाए हुए चिल्ला उठती है ।

बिशनी : मानक ! मानक !

एक साथ चार-छह गोलियाँ चलने और उसके साथ सिपाही के कराहने का शब्द सुनाई देता है। सहसा खामोशी छा जाती है। बिशनी उसी तरह चिल्लाती है : मानक ! मानक !

मुन्नी जल्दी से करवट बदलकर उठ बैठती है।

मुन्नी : **(घबराए हुए स्वर में)** माँ !

बिशनी : **(उसी तरह)** मानक !

मुन्नी जल्दी से उठकर ढिबरी जला देती है। प्रकाश का रंग हल्के नीले से फिर पीला हो जाता है। मुन्नी बिशनी की चारपाई पर जा बैठती है।

मुन्नी : क्या बात है, माँ ?

बिशनी आँखों से हाथ हटाकर, चुँधियाई सी नजरों से चारों ओर देखती है।

बिशनी : **(कुछ खोजती सी)** मानक !

मुन्नी : तुम रोज भैया के ही सपने देखती हो, माँ ? मैंने तुमसे कहा था, अगले मंगल को भैया की चिट्ठी जरूर आएगी।

बिशनी : **(जैसे आत्मगत)** चिट्ठी आएगी ?......और वह आप.....?

मुन्नी : थोड़े दिनों में भैया आप भी आएँगे। तुम आप ही कहती थीं कि वे जल्दी आएँगे और मेरे लिए कड़े और चूड़ियाँ लाएँगे......।

बिशनी : कड़े और चूड़ियाँ ? ......ओ मुन्नी !

उसे अपने साथ सटा लेती है और आँखों से टप-टप पानी बरसने लगता है।

मुन्नी : भैया मेरे लिए जो कड़े लाएँगे, वे तारो और बंतो के कड़ों से भी अच्छे होंगे न, माँ ?

बिशनी आँखें बंद करके नकारात्मक भाव से सिर हिलाती है पर शीघ्र ही अपने को सँभाल लेती है।

बिशनी : हाँ बेटी, तेरे कड़े सबके कड़ों से अच्छे होंगे।

मुन्नी : सुच्चे मोतियों के कड़े होंगे न, माँ ?

बिशनी : हाँ बेटी, सुच्चे मोतियों के कड़े.....!

उसका माथा चूमकर उसे अलग हटा देती है।

: अब सो जा, अभी बहुत रात बाकी है।

मुन्नी अपनी चारपाई पर चली जाती है। बिशनी उठकर ढिबरी बुझा देती है। उसके ढिबरी बुझाते ही गहरा अँधेरा छा जाता है। अँधेरे में बिशनी के बुदबुदाने का स्वर सुनाई देता है।

: ताती वा ना लगाई, पार ब्रह्म सहाई।
राखनहारे राखिआ, प्रभु व्याधि मिटाई......।

पर्दा गिरता है।

❑❑❑

अभ्यास

एकांकी के साथ

1. बिशनी और मुन्नी को किसकी प्रतीक्षा है, वे डाकिए की राह क्यों देखती हैं ?
2. बिशनी मानक को लड़ाई में क्यों भेजती है ?
3. सप्रसंग व्याख्या करें –
   (क) यह भी हमारी तरह गरीब आदमी है ।
   (ख) वर-घर देखकर ही क्या करना है, कुंती ? मानक आए तो कुछ हो भी । तुझे पता ही है, आजकल लोगों के हाथ कितने बढ़े हुए हैं ।
   (ग) नहीं, फौजी वहाँ लड़ने के लिए हैं, वे नहीं भाग सकते । जो फौज छोड़कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है ।
4. 'भैया मेरे लिए जो कड़े लाएँगे, वे तारो और बंतो के कड़ों से भी अच्छे होंगे न' मुन्नी के इस कथन को ध्यान में रखते हुए उसका परिचय आप अपने शब्दों में दीजिए ।
5. बिशनी मानक की माँ है, पर उसमें किसी भी सिपाही की माँ को ढूँढ़ा जा सकता है, कैसे ?
6. एकांकी और नाटक में क्या अंतर है ? संक्षेप में बताएँ ।
7. आपके विचार से इस एकांकी का सबसे सशक्त पात्र कौन है, और क्यों ?
8. दोनों लड़कियाँ कौन हैं ?
9. कुंती का परिचय आप किस तरह देंगे ?
10. मानक और सिपाही एक दूसरे को क्यों मारना चाहते हैं ?
11. मानक स्वयं को वहशी और जानवर से भी बढ़कर क्यों कहता है ?
12. मुन्नी के विवाह की चिंता न होती तो मानक लड़ाई पर न जाता, यह चिंता भी किसी लड़ाई से कम नहीं है ? क्या आप इस कथन से सहमत हैं ? अपना पक्ष दें ।
13. सिपाही के घर की स्थिति मानक के घर से भिन्न नहीं है, कैसे । स्पष्ट करें ।
14. पठित एकांकी में दिए गए रंग-निर्देशों की विशेषताएँ बताएँ ।
15. 'सिपाही की माँ' की संवाद योजना की विशेषताएँ बताएँ ।

एकांकी के आस-पास

1. मोहन राकेश हिंदी के एक अत्यंत समर्थ नाटककार हैं । इनकी नाट्यकृतियों को अपने पुस्तकालय से लेकर पढ़ें एवं उनकी विषय-वस्तु पर कक्षा में चर्चा करें ।
2. आप अपनी पसंद से मोहन राकेश के नाटक का मंचन विद्यालय में करें । इसमें अपने शिक्षकों की भी मदद लें ।
3. पठित एकांकी का मंचन अपने मित्रों के साथ रंग निर्देशों का पालन करते हुए करें ।

4. प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु एवं चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' – दोनों में युद्ध की पृष्ठभूमि है । इन दोनों रचनाओं में क्या समानता-असमानता है ? विचार कीजिए ।
5. एकांकी में जापान और अंग्रेजी फौज के बीच दूसरे विश्वयुद्ध की लड़ाई का उल्लेख है । दूसरे विश्वयुद्ध के क्या परिणाम हुए ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखें –
   झाग, पिलसन, शायत, ब्रम्मा, चरित्तर, विदवान, समुंदर, मुलक, फिकर
2. निम्नलिखित वाक्यों से संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण पद चुनें –
   (क) मानक कहता था कि जहाज इत्ता बड़ा होता है कि हमारे जैसे चार गाँव एक जहाज में आ जाएँ ।
   (ख) ये सारा शहर ढूँढ़ आए हैं, पर कहीं दस गज मलमल नहीं मिलती ।
   (ग) हमने रास्ते में सैकड़ों सिपाहियों की गली-सड़ी लाशें देखी थीं ।
   (घ) यह तो मरता हुआ कबूतर भी आँखों से नहीं देख सकता ।
   (ङ) जब तक मैं सामने हूँ इसकी आँखों का रंग नहीं बदलेगा ।
3. 'भैया आप छुट्टी लेकर आ रहे हो' यहाँ 'आप' कौन सा सर्वनाम है ?
4. 'दिल हलका करना' का क्या अर्थ है ?
5. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ –
   (क) क्या पता है ये ब्रम्मा से आई हैं या कहाँ से आई हैं ?
   (ख) दिनों का कोई हिसाब नहीं है, माँजी ।
   (ग) उसके कड़ों के मोती तारों की तरह चमकते हैं ।
   (घ) तू ऐसा क्यों हो रहा है, बेटे ?
6. रेखांकित अंश किस पदबंध के उदाहरण हैं ?
   (क) यह दिल का बहुत भोला है ।
   (ख) यह तो मरता हुआ कबूतर भी नहीं देख सकता ।
   (ग) क्यों री, डाक वाली गाड़ी ही थी ?
   (घ) हमारे घर की हालत बहुत खराब है ।
   (ङ) तू इसकी आँखों का रंग नहीं पहचानती ।

शब्द निधि :

सीलदार	: जहाँ हमेशा नमी रहती है	बेवा	: विधवा
खस्ताहाल	: बुरी स्थिति	मियाद	: समय-सीमा
नदीदे	: बिना आँखवाला, अंधा	क्रिस्टान	: ईसाई
निःस्तब्धता	: मौन, सन्नाटा	हरफ	: अक्षर
लोई	: मोटी चादर	काली जबान	: बुरी जबान जो लग जाए
सुच्चे	: शुद्ध	तिरिया	: स्त्री
निरे हाल	: खाली पेट	मुटियार	: जवान
वहशी	: क्रूर, उन्मत्त	स्वांग	: भेष